

तस्पृष्टमत्तः स्थानाम् 30, 33; vgl. P. 1, 1, 9, Schol. auch von den Lauten selbst: अचो ऽस्पृष्टा यणास्वीयनेमस्पृष्टाः शलः स्मृताः। शेपाः स्पृष्टा क्लः प्रोक्ताः Çikṣuḥ 30 in Ind. St. 4, 118. स्पृष्टता, अ०, ईषत्, अर्ध० Comm. zu VS. Prāt. 1, 72. Vgl. डुःस्पृष्ट und डुःस्पृष्टः स रेफो ऽतिस्पृश्यते Comm. zu RV. Prāt. 14, 8. — 2) अर्पः, उदकम्, जलम् u. s. w. bestimmte Theile des Körpers mit Wasser in Berührung bringen, eine Waschung vornehmen, sich den Mund spülen u. s. w. Çāṅkh. Gṛh. 1, 10. Āc. Ç. 1, 7, 3. M. 3, 76. 99. MBu. 3, 10106. R. 1, 24, 11 (23, 11 Gorr.). 31, 31. 44, 28. 2, 52, 20. 56, 4. 111, 23. 4, 44, 77. Mārk. P. 61, 74. B. g. P. 4, 4, 24. 5, 20, 23. ausnahmsweise mit instr. des Wassers und acc. der berührten Theile: खानि चैव स्पृष्टेदङ्गिः M. 2, 60. — 3) durch Berührung einen Eindruck empfangen, fühlen: प्रणोति, पश्यति, जिघ्रति, रसयते, स्पृशति Praçnop. 4, 2. स्पृशति Maitrjup. 6, 7. श्रुवा, स्पृष्टा, दृष्टा, भुक्ता, घ्रावा M. 2, 98. श्रुतं दृष्टं स्पृष्टम् Spr. (II) 6562. — 4) berühren in astr. Sinne: (रेहिणीम्) स्पृशन्नुदग्याति यदा शशाङ्कः Varāh. Bh. S. 24, 29. भुज्गर्भं स्पृशत् 47, 12. 11, 62. केतुभिराधूमि ते ऽथ वा स्पृष्टे न तत्रे 53. von einer gedachten Linie (सूत्र) Golādu. Madhjam. 24. — 5) berühren so v. a. reichen —, dringen bis zu: तनुवा दिवम् Buāg. P. 4, 5, 3. Daçak. 60, 5. शब्दे दिवमिवास्पृशत् MBu. 1, 1174. गाण्डीवस्य निर्घोषः — अस्पृशदिवम् 7, 1334. R. 2, 89, 16 (97, 21 Gorr.). Çāk. 47. Buāg. P. 10, 46, 46. 75, 10. स्तेमो यो वै हृदि पस्पर्शत् RV. 4, 41, 1. आहृतिभिर्हृदि स्पृशन् Buāg. P. 1, 10, 30. डुरुत्तैर्मर्म पस्पृषुः 3, 4, 1. अननुभूतो ऽर्धो न मनः स्पृष्टुर्मर्हति 4, 29, 65. यदि ते कर्णमस्पृशम् so v. a. zu Ohren kommen 10, 64, 10. नार्धकामो धर्मस्य शततमीमपि कलो स्पृशतः erreichen, gleich kommen Daçak. 64, 18. fg. न स्पृशति कवयो गिरापि यत् mit Worten erreichen so v. a. zu schildern vermögen Spr. (II) 5306. Vgl. दिविस्पृशन्. — 6) berühren so v. a. in unmittelbare Beziehung treten: पौरुषं ज्योतिर्विषयानस्पृशत् Savyadarçanas. 37, 8. कर्मसु श्रोत्रस्पृशषिस्पृष्टवस्तुषु Buāg. P. 4, 29, 47. अयापि मानुषो भावः स्पृशते (!) त्वाम् so v. a. am Herzen liegen MBu. 17, 106. — 7) Jmd (acc.) berühren mit (instr.) so v. a. versehen mit: इमान्स्पृशन् मन्मभिः शूर वान्नान् so v. a. erfülle mit Muth RV. 4, 3, 15. — 8) treffen, zu Theil werden (insbes. von Uebeln): तं न कश्च न पाप्मा स्पृशति Khānd. Up. 8, 6, 3. स्पृशेदेनस्तथा च माम् MBu. 1, 4892. Spr. (II) 6062. दोषः MBu. 3, 16735. जरा, रोगाः, वैषण्यम् 13, 7446. fg. (स्पृश्यति mit der ed. Bomb. st. अ० zu lesen). भयम् R. Gorr. 2, 36, 10. यावत्तु कन्यामृतवः स्पृशति Visuṇu in Dājāb. 272, 3 v. u. भावाः Kumāras. 6, 95. तुल्यो दण्डः Spr. (II) 738 (med.). आपदः 1037. शोकः 4467. व्याधिः 6888. तापः Varāh. Bh. S. 5, 74. अनयः 9, 13, 31. दारिद्र्यम् Kathās. 55, 23. पातकम् Buāg. P. 4, 14, 11. अधर्मः 6, 2, 2 (med.). 9, 4, 39. ब्रह्मशापः 13. अशुद्र्याः Ratnāv. 4, 7. pass. तैर्दोषैर्नृपः स्पृश्यते Mēlāh. 137, 15. अभिलाषेण पस्पृशे Rāga-Tar. 4, 19. अनुशयाग्निना 316. सारासारविचारेण 6, 193. तयरेगेण 289. मदेन Daçak. 83, 10. असत्यवाददोषेण 90, 1. 2. स्पृष्ट getroffen, behaftet mit: बालवधेन MBu. 13, 381. देवस्य मायया Buāg. P. 3, 2, 10. 4, 6, 48. fg. 30, 33. कालेन 3, 15, 3. शङ्का० Megh. 70. अनघ० Ragh. 10, 20. ब्रह्ममुख० Buāg. P. 7, 15, 35. वैदग्ध्यविमुग्धताव्यतिकरस्पृष्टे विधानं विधेः Spr. (II) 6211. किञ्चिद्वागभीरवक्रिमलवस्पृष्टे मनाभाषते Śāh. D. 40, 11. अस्पृष्टपुरुषात्तर (शब्द) so v. a. keinem Andern zukommend Kumāras. 6, 75. कलिना so v. a. besessen, bezaubert

MBu. 3, 2361. रामया Buāg. P. 4, 28, 59. — 9) anrühren so v. a. sich aneignen: न कर्मणि नियुक्तः सन्धनं किञ्चिदपि (so ed. Bomb.) स्पृशेत् MBu. 4, 131. — 10) erreichen, theilhaftig werden, an sich erfahren: परमं श्रियः पदम् Kām. Nitis. 4, 79. Spr. (II) 6139. महात्मनयम् MBu. 3, 318. वेपथुम् 9, 1202. अभूतपूर्वं शोकम् R. 7, 98, 4. महोदताम् Ragh. 3, 32. मणिनाङ्किर्दोषान्स्पृशति न च सर्वो मणिगुणान् Spr. (II) 773. लाभालम्भा, मरणम्, जीवितम् 7068. तारुण्यम् 7260. उद्योगम् Kathās. 16, 72. स्पृष्टमैश्वर्या M. 8, 205. स्पृष्टाकृतिः (स्पृष्टाकृतिः ed. Calc.) पत्तरथेन्द्रकेतोः Ragh. 18, 29. अस्पृष्टमद Spr. (II) 517. अस्पृष्टवस्तमस्क, स्पृष्टमाय Buāg. P. 6, 3, 15. स्पर्शः स्पृष्टपूर्वः ein Gefühl, das man früher empfunden hat, MBu. 4, 744. — 11) im Sinne des caus. zukommen lassen: अस्पृशत् — द्विजेभ्यो ऽयुतं गवाम् Weber, Kaṣṇaś. 303. अस्पृशद्वायुतम् (अस्पृशत् st. अस्पृशत्) Buāg. P. 10, 79, 18. — स्पृशेत् im Comm. zu TS. Prāt. 2, 36 schlechte Lesart für स्पर्शयेत्; स्पृष्टा R. Gorr. 2, 123, 17 fehlerhaft für पृष्टा:

— caus. स्पर्शयति (med. ग्रहणसंश्लेषणयोः v. l. für स्पर्श, स्पाशयते Vop. in Dhātup. 33, 7) 1) berühren lassen (mit doppeltem acc.), in unmittelbare Berührung bringen mit (loc. instr.): पुत्रदारस्य वाय्वेन शिरसि स्पर्शयेत्पृथक् M. 8, 114. R. 2, 64, 27 (66, 26 Gorr.). सुवर्णमग्निम् P. 8, 3, 102, Schol. जिह्वामध्यास्ताभ्यां चोतराङ्गम्यात्स्पर्शयति TS. Prāt. 2, 17. येन स्पर्शयति तत्करणम् 34. कनूमूले (loc.) जिह्वामूलेन कवर्गे स्पर्शयति 35. शवर्गे कार्ये जिह्वामध्येन वर्णं तालौ स्पर्शयेत् Comm. zu 36, v. l. वकारे कार्ये ऽधरोष्ठाताभ्यामुत्तरदत्ताभ्यां सह स्पर्शयेत् zu 43. यज्ञं देवेषु पिस्पृशः RV. 6, 15, 18. स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य विपः er bespicht mit Geschossen den Leib 49, 12. श्रेष्ठे हृपैस्तन्वं स्पर्शयस्व überzieh dich mit 10, 112, 3. — 2) durch Berührung einen Eindruck empfangen, fühlen (vgl. simpl. 3): प्रणोति पश्यति जिघ्रति रसयति चैव स्पर्शयति Maitrjup. 6, 7. — 3) Jmd Etwas zukommen lassen, schenken, hingeben: ब्राह्मणाय ग्राम् M. 11, 135. MBu. 13, 2961 (med.). 3180. Hariv. 14266. R. 7, 33, 9. 15. Ragh. 2, 49. मातापितृविकीनो यस्त्यक्तो वा स्यादकारणात्। आत्मानं स्पर्शयेद्यस्मै स्वयंदत्तु स स्मृतः II M. 9, 177. आत्मानं स्पर्शयाम्यद्य पाणिं गृह्णीष्व मे spricht ein Weib zu einem Manne MBu. 13, 1502. पत्न्यर्थं स्पर्शिता R. 7, 30, 27.

— अधि (oberflächlich) berühren: वेद्यत्तम् Çat. Br. 11, 2, 3, 33. — caus. reichen lassen bis zu: पन्थो वाधिस्पर्शयेत्कर्तुं वा TS. 6, 2, 6, 1.

— अनु 1) berühren, reichen an RV. 4, 4, 2. — 2) berühren mit so v. a. erfüllen mit: तेनैव मे दशननुस्पृशतात् Buāg. P. 3, 9, 22.

— अयप scheinbar MBu. 1, 764, da st. अयो ऽपस्पृश्य mit der ed. Bomb. अय उप० zu lesen ist. Vgl. अनयस्पृश्य.

— अभि 1) berühren: कथमस्मद्विधा नारी जितेन्द्रियमभिस्पृशेत् MBu. 1, 2931. — 2) treffen, heimsuchen: निद्रो तु वैज्वी पाप्मानमुपदिशति। सा स्वभावत एव सर्वभ्रमाणो ऽभिस्पृशति Suçr. 1, 329, 11. fg.

— आ leicht berühren: शिरसास्पृश्य (= ईषत्स्पृष्टा Comm.) पादयोः Buāg. P. 10, 44, 50. partic. आस्पृष्ट 1, 6, 9 (nach dem Comm.). Çat. Br. 9, 3, 4, 15.

— उद hinaufreichen zu (acc.): नेदिदं दिवमस्पृशन् AV. 5, 19, 1.

— उप० 1) berühren, hinreichen bis zu: दिव्यं सानुं RV. 7, 2, 1. 10, 125, 7. अर्चिषो यातुधानान् 10, 87, 2. रुस्ताभ्याम् 137, 7. AV. 1, 33, 4. वासो नः स्योऽनुपस्पृशत् 14, 2, 51. ज्ञायो पतिं मुखं शिवमुपस्पृशति berührt zärt-